स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स

RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200

## बड़बोले एडिंग्टन और चंद्रशेखर का कैरियर

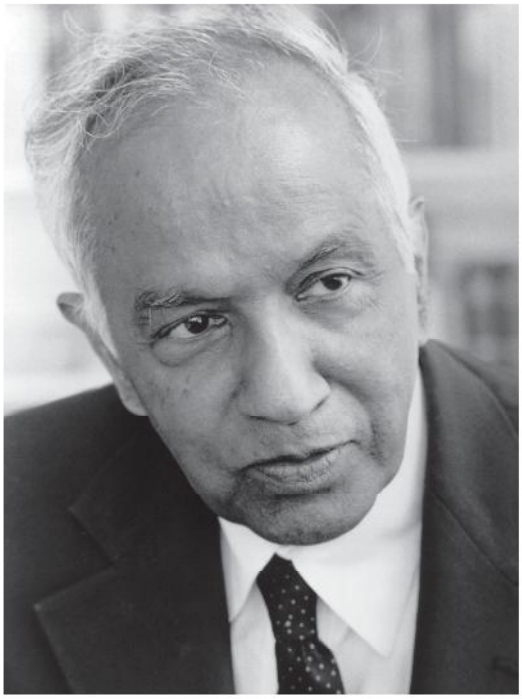

http://www-news.uchicago.edu/releases/photos/chandra/subrahmanyan.jpg

न्यूटन का यह कथन मशहूर है, "मैं अपने पुरखों के कंधों पर खड़े होकर देख रहा हूं, इसलिए मुझे ज़्यादा दूर तक दिखाई देता है।" आम तौर पर माना जाता है कि इस कथन के ज़रिए न्यूटन विनम्रतापूर्वक अपने पुरखों को धन्यवाद दे रहे हैं। दरअसल, इस कथन के ज़रिए न्यूटन अपने समकालीन रॉबर्ट हुक को यह बता रहे थे कि जहां वे खुद (न्यूटन) तो विज्ञान की लंबी एक विरास के दावेदार हैं, वहीं हुक ऐसी किसी विरासत का दावा नहीं कर सकते।

ऐसे बड़बोलेपन में न्यूटन न तो अकेले हैं, और न ही आखरी। 1930 में भारतीय भौतिक शास्त्री सुब्रमण्यन चंद्रशेखर अपना यह विचार लेकर इंग्लैण्ड पहुंचे थे कि यदि किसी तारे का आकार एक निश्चित सीमा से बड़ा हो, तो मृत्यु के बाद वह ब्लैक होल में तबदील हो जाएगा। चंद्रशेखर के पास इस विचार के पर्याप्त प्रमाण भी थे।

कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के खगोल शास्त्री आर्थर एडिंग्टन ने चंद्रशेखर को यह विचार 1935 में रॉयल एस्ट्रॉनॉमिकल सोसायटी की एक बैठक में प्रस्तुत करने को कहा। और तो और, एडिंगटन ने चंद्रशेखर की पूरी तैयारी करवाई, उनके प्रस्तुतीकरण को संवारने में मदद की, तमाम संभावित सवाल पूछकर उन्हें तैयार किया।

बैठक के दिन चंद्रशेखर के बाद एडिंग्टन का व्याख्यान रखा गया था। चंद्रशेखर के वक्तव्य के बाद एडिंग्टन बोलने के लिए खड़े हुए, और उन्होंने जो कुछ कहा, उसकी कल्पना चंद्रशेखर ने सपने में भी नहीं की होगीः "अभी जो पर्चा प्रस्तुत हुआ वह पूरी तरह गलत हैं।" उन्होंने आगे कहा कि यह पर्चा "तारकीय मूर्खता है।"

वास्तविकता इसके एकदम विपरीत थी। वह शोध पत्र श्रेष्ठ शोध का नतीजा था। प्रमाण यह है कि इसी काम के लिए चंद्रशेखर को 1983 में नोबेल से नवाज़ा गया। कहते हैं कि उस दिन एडिंग्टन के कथन के चलते ही यह नोबेल पुरस्कार इतनी देर से आया था। और सबसे बुरी बात तो यह हुई कि चंद्रशेखर को इंग्लैण्ड छोड़कर अमरीका जाना पड़ा, जहां वे एक साधारण वैज्ञानिक बनकर रह गए।

प्रकाशक, मुद्रक सी.एन. सुब्रह्मण्यम की ओर से निदेशक एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1 भोपाल (म.प्र.) 462 011 से मुद्रित। सम्पादकः डॉ. सुशील जोशी